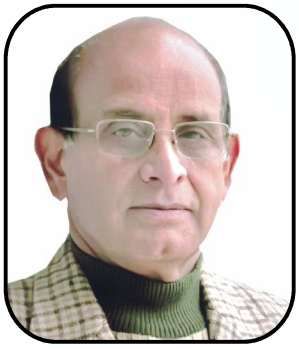

## PROF. LALIT KUMAR MANGOTRA

Prof. Lalit Kumar Mangotra, a former professor of Physics, is an eminent Dogri writer. Ever since the 1970s, he has been consistently contributing to the genres of short story, playwriting, poetry, essay, literary criticism etc. He remains a prominent voice promoting and bringing into vogue the Dogri language and literature.

2. Born on 14th April, 1944, Prof. Mangotra received his M.Sc. degree in Physics from the University of Jammu and Kashmir in 1968, and Ph.D. degree in High Energy Physics in 1974 from the University of Jammu. Subsequently, he embarked on an illustrious career involving teaching and research in Physics and retired in 2004 as a Professor of Physics with more than 300 scientific publications to his credit.

3. Prof. Mangotra published his first Dogri short story in 1976 and since then he has been writing prolifically. He has 13 published works to his credit, covering diverse literary genres such as fiction, poetry, essays, literary criticism etc. Many of his books have been prescribed for the post-graduate course in Dogri because of their high literary value.

4. For the last 30 years, Prof. Mangotra has been chairing the Dogri Sanstha, a pioneering and the oldest literary organisation of Jammu and Kashmir. In that capacity, he has spearheaded various initiatives to popularise and propagate Dogri. His signal contribution to this cause has been in integrating Dogri with the information technology. He performed a significant role in the initiatives such as localisation of 11 computer software tools in Dogri, creation of online Dogri-English-Dogri dictionary and adaptation of a course on computer concepts in Dogri.

5. Prof. Mangotra's outstanding contribution in the field of literature and education has been duly acknowledged from time to time. Among the numerous honours and awards that he has received are Sahitya Akademi Award, 2011; J&K State Award for Outstanding contribution to Dogri Literature, 2009; Best Book Awards by J&K Academy of Art, Culture and languages for the years 2000 and 2010; Senior Fellowship (Literature) of Ministry of Tourism and Culture, Govt. of India and the Kunwar Viyogi Lifetime Achievement Award, 2024. He has had also the honour of being a member of prominent decision-making bodies such as the Press Council of India (the only person from J&K with the distinction of being in this body twice over); the Executive Board of Sahitya Akademi (2003-2007 and 2013-2017);Chairman, Governing Board of Govt. College for Women Parade Ground, Jammu; Member of Council for Promotion of Indian Languages, Ministry of HRD, Govt. of India and Chairman of North Zone Selection Committee for Saraswati Samman of K.K. Birla Foundation, among others. He was also a member of the Official Indian Delegations of Writers to China and Japan.

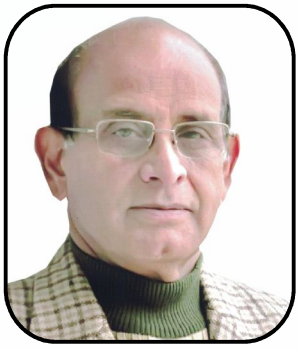

# प्रो. ललित कुमार मंगोत्रा

भौतिकी के भूतपूर्व प्रोफेसर प्रो. ललित कुमार मंगोत्रा एक प्रख्यात डोगरी लेखक हैं। वर्ष 1970 के दशक से ही वह लघुकथा, नाटक लेखन, कविता, निबंध, साहित्यिक समालोचना आदि विधाओं में लगातार योगदान दे रहे हैं। वह डोगरी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने और इसे प्रचलन में लाने वाली एक प्रमुख आवाज़ बने हुए हैं।

2. 14 अप्रैल, 1944 को जन्मे, प्रो. मंगोत्रा ने 1968 में जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय से भौतिकी में एम.एस.सी. की डिग्री और 1974 में जम्मू विश्वविद्यालय से उच्च ऊर्जा भौतिकी में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद, उन्होंने भौतिकी में शिक्षण और अनुसंधान से जुड़े एक शानदार करियर की शुरुआत की और वर्ष 2004 में भौतिकी के प्रोफेसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए, उनके नाम 300 से अधिक वैज्ञानिक प्रकाशन हैं।

3. प्रो. मंगोत्रा ने वर्ष 1976 में अपनी पहली डोगरी लघुकथा प्रकाशित की और तब से वे लगातार लिख रहे हैं। उनके नाम 13 प्रकाशित कृतियाँ हैं, जिनमें कथा, कविता, निबंध, साहित्यिक समालोचना आदि जैसी विविध साहित्यिक विधाएँ शामिल हैं। उनकी कई पुस्तकों को उनके उच्च साहित्यिक महत्व के कारण डोगरी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित किया गया है।

4. पिछले 30 वर्षों से, प्रो. मंगोत्रा जम्मू और कश्मीर के एक अग्रणी और सबसे पुराने साहित्यिक संगठन डोगरी संस्था की अध्यक्षता कर रहे हैं। उस पद पर रहते हुए, उन्होंने डोगरी को लोकप्रिय बनाने और उसका प्रचार–प्रसार करने के लिए विभिन्न पहलों का नेतृत्व किया है। उनके इस उद्देश्य के लिए एकमात्र योगदान डोगरी को सूचना प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करना रहा है। उन्होंने डोगरी में 11 कंप्यूटर सॉफ्टवेयर टूल्स के स्थानीयकरण, ऑनलाइन डोगरी–अंग्रेजी–डोगरी शब्दकोश के निर्माण और डोगरी में कंप्यूटर अवधारणाओं पर एक पाठ्यक्रम के अनुकूलन जैसी पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. मंगोत्रा के उत्कृष्ट योगदान को समय–समय पर विधिवत स्वीकार किया गया है। डोगरी साहित्य में उत्कृष्ट योगदान के लिए जम्मू एवं कश्मीर राज्य पुरस्कार, 2009; वर्ष 2000 और वर्ष 2010 के लिए जम्मू एवं कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार; भारत सरकार के पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय की वरिष्ठ फैलोशिप (साहित्य) और कुंवर वियोगी लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, 2024 । उन्हें प्रमुख निर्णय लेने वाले निकायों का सदस्य होने का सम्मान भी मिला है जैसे कि प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (जम्मू एवं कश्मीर से एकमात्र व्यक्ति जिसे इस निकाय में दो बार रहने का गौरव प्राप्त है); साहित्य अकादमी के कार्यकारी बोर्ड (2003–2007 और 2013–2017); गवर्नमेंट कॉलेज फॉर विमेन परेड ग्राउंड, जम्मू के गवर्निंग बोर्ड के अध्यक्ष; भारतीय भाषाओं के प्रचार परिषद, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य और केके बिड़ला फाउंडेशन के सरस्वती सम्मान के लिए उत्तर क्षेत्र चयन समिति के अध्यक्ष। वह चीन और जापान गए लेखकों के आधिकारिक भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य भी थे।